بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in   KhulasaKhutba-07.06.2024   محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बेयरे मौऊना नामक युद्ध अभियान की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन तथा दुनिया की वर्तमान अवस्था के परिदृश्य में अहमदियों को विशेष रूप से दुआ की तहरीक

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा **7 जून 2024**. स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस सिरये की पृष्ठ भूमि के विषय में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ؓ लिखते हैं कि सुलेम एवं ग़तफ़ान नामक क़बीले अरब के मध्य में मुर्तफ़ा नजद स्थान पर आबाद थे तथा मुसलमानों के विरुद्ध मक्का के क़ुरैशियों के साथ सांठ-गांठ रखते थे। बनू आमिर नामक क़बीले का एक रईस अबू बरा आमरी आँहज़रत ﷺ की सेवा में उपस्थित हुआ जिसे आप ﷺ ने अति विनम्रता एवं स्नेह पूर्ण आचारण के साथ इस्लाम की तबलीग़ फ़रमाई। उसने प्रत्यक्षतः बड़े चाव से एवं ध्यान पूर्वक आप ﷺ की तक़रीर को सुना किन्तु मुसलमान नहीं हुआ, परन्तु उसने आप ﷺ से निवेदन किया कि आप स. मेरे साथ कुछ सहाबियों को रवाना फ़रमाएँ जो नजद के लागों को इस्लाम की तबलीग़ करें और मुझे आशा है कि वे आप स. की दावत को रद्द नहीं करेंगे। आप ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे तो नजद के लोगों पर विश्वास नहीं है। अबू बरा ने सुरक्षा का भरोसा दिलाया। चूँकि वह एक क़बीले का रईस था तथा प्रतिष्ठावान व्यक्ति था इस लिए आप ﷺ ने उस पर विश्वास कर लिया तथा सहाबा ؓ का एक दल नजद की ओर भिजवा दिया। बुख़ारी में आता है कि रअल तथा ज़कवान इत्यादि नामक

क़बील के कुछ लोग इस्लाम क़बूल करके तथा अपनी क़ौम में इस्लाम के दुशमनों के विरुद्ध सहायता मांगने के लिए आप ﷺ की सेवा में निवेदन लेकर आए थे, जिस पर आप स. ने यह दल रवाना फ़रमाया था। हो सकता है कि अबू बरा भी उन लोगों के साथ आया हो। अतएव आँहज़रत ﷺ ने सिफ़र 4 हिजरी में मुनज़िर बिन उमरू ؓ के नेतृत्व में सत्तर सहाबियों की एक पार्टी रवाना फ़रमाई जिसमें लगभग सभी सहाबी क़ारी तथा क़ुर्आन के विद्वान थे।

इतना बड़ा अभियान आप स. ने केवल दावत व तबलीग़ के कर्त्तव्य को पूरा करने तथा इस्लाम के प्रचार प्रसार के पवित्र काम को आगे बढ़ाने के लिए किया।

इस सिरये के सम्बंध में आँहज़रत ﷺ के एक पत्र का भी वर्णन मिलता है जो आप स. ने आमिर बिन तुफ़ैल के नाम लिखा था। हज़रत हराम बिन मलहान ؓअपने दो साथियों हज़रत ज़ैद बिन कअब ؓ तथा हज़रत मुंज़िर बिन मुहम्मद ؓ के साथ आप स. का पत्र लेकर आमिर बिन तुफ़ैल के पास गए। उन्होंने शुरु में तो आओभगत करने का पाखंड किया परन्तु जब हराम बिन मलहान ؓ ने इस्लाम की तबलीग़ शुरु की तो वहाँ उपस्थित लोगों ने दुष्टता दिखाई तथा इस निर्दोष सन्देश वाहक को पीछे से भाले का वार करके के ढेर कर दिया। उस समय हज़रत हराम बिन मलहान ؓ की ज़बान पर ये शब्द थे- اَللّٰہُ اَکْبَرُ.فُزْتُ وَرَبِّ الْکَعْبَۃِ अर्थात- अल्लाहु अकबर, कअबे की रब की क़सम, मैं तो सफ़ल हो गया। आमिर बिन तुफ़ैल ने आँहज़रत ﷺ के सन्देश वाहक की हत्या पर ही बस नहीं की बल्कि उसके बाद बनू आमिर नामक क़बीले के लोगों को उकसाया कि वे मुसलमानों की शेष जमाअत पर भी हमला कर दें, परन्तु उन्होंने इंकार किया। इस पर आमिर ने क़बीला सुलेम में से बनू रअल, ज़कवान तथा असिया इत्यादि के साथ मिल कर मुसलमानों के इस छोटे से तथा निःसहाय दल पर हमला कर दिया। मुसलमानों ने जब इन पिशाच दुष्टों से कहा कि हमारा तुमसे कोई बैर नहीं है, हम तो रसूलुल्लाह ﷺ की ओर से तुमसे लड़ने नहीं अपित् एक काम के लिए आए हैं, परन्तु उन्होंने एक न सुनी तथा सबको तलवार के घाट उतार दिया। इस सिरये में हज़रत आमिर बिन फ़हीरा ؓ की शहादत का वर्णन इस प्रकार मिलता है।

ये हज़रत अबू बकर ؓ के द्वारा स्वतंत्र किए हुए ग़ुलाम थे तथा इनको यह सौभाग्य भी प्राप्त है कि ये आँहज़रत ﷺ तथा हज़रत अबू बकर ؓ के साथ हिजरत में भी शामिल थे। यह भी बेयर मऊना के अभियान में शहीद हुए थे। इनके बारे में आमिर बिन तुफ़ैल ने कहा कि मैंने देखा कि आमिर बिन फ़हीरा ؓ हत्या किए जाने के बाद आसमान की ओर उठाए गए, यहाँ तक कि आसमान उनके तथा

ज़मीन के बीच है, फिर वे धरती पर उतारे गए। यह अभी मुसलमान नहीं हुआ था तथा उसने यह दृश्य देखा। नबी करीम ﷺ को उनकी ख़बर पहुंची तथा आप स. ने उनकी हत्या की सूचना सहाबियों रज़ी. को दी और फ़रमाया- तुम्हारे साथी शहीद हो गए हैं, तथा उन्होंने अपने रब से दुआ की, कि ऐ हमारे रब! हमारे सम्बंध में हमारे भाईयों को बता कि हम तुझसे ख़ुश हो गए तथा तू हमसे ख़ुश हो गया। अतएव अल्लाह तआला ने इसके विषय में बता दिया।

हज़रत आमिर बिन फ़हीरा रज़ी. को शहीद करने वाले जब्बार बिन सलमी जो कि बाद में मुसलमान हो गए थे, बयान करते हैं कि जिस चीज़ ने मुझे इस्लाम की ओर खींचा वह यह है कि जब मैंने आमिर बिन फ़हीरा رضي الله عنه को शहीद किया तो उनके मुंह से अचानक निकला- فُزْتُ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ अर्थात- कअबे के रब की क़सम, मैं सफल हो गया। ये शब्द मेरे दिल में उतर गए, मैं सोच में पड़ गया कि आख़िर इन शब्दों का क्या मतलब होगा? मैंने बाद में लोगों से इसका कारण पूछा तो पता चला कि मुसलमान लोग ख़ुदा के रास्ते में जान देने को बड़ी कामयाबी मानते हैं तथा इस बात का मेरे दिल पर ऐसा प्रभाव हुआ कि मैं मुसलमान हो गया।

इस सिरये में शामिल होने वाले सभी सहाबियों रज़ी. के नाम सीरत की किताबों में उल्लिखित नहीं हैं परन्तु लगभग 29 शहीद होने वाले सहाबियों के नाम लिखे हैं। अतः जीवित बच जाने वाले सहाबियों रज़ी. के बारे में लिखा है कि सिरये में शामिल होने वाले सहाबा रज़ी. में से दा व्यक्ति हज़रत उमरू बिन उम्य्या رضي الله عنه तथा मुंज़िर बिन मुहम्मद رضي الله عنه थे। मुंज़िर लड़ते हुए शहीद हो गए थे जबकि आमिर बिन तुफ़ैल ने अपनी माँ की ओर से एक ग़ुलाम को स्वतन्त्र करने की मानी हुई मन्नत के कारण हज़रत उमरू رضي الله عنه के क़बीले मज़र नामक से सम्बंध रखने के कारण अरब की प्रथानुसार उनके माथे के कुछ बाल काट कर स्वतंत्र छोड़ दिया था। यहाँ से रवाना होने के बाद हज़रत उमरू बिन उमय्या رضي الله عنه ने एक जगह बनू आमिर अथवा बनू सुलेम के दो आदमियों की हत्या कर दी, जबकि इन दोनों क़बीलों को रसूलुल्लाह ﷺ ने एक समझौते के कारण शरण दे रखी थी, जिसका हज़रत उमरू رضي الله عنه को पता नहीं था। अतएव आप स. ने उन हत्याओं का बदला चुकाया। आँहज़रत ﷺ और आप स. के सहाबा रज़ी. को रजीअ तथा बेयरे मऊना की घटना की सूचना लगभग एक ही समय पर मिली और आप स. को इसका अति दुःख हुआ, ऐसा दुःख इससे पहले आप स. को कभी हुआ था और न बाद में कभी हुआ।

लगभग 80 साथियों का इस तरह धोखे से मारा जाना तथा सहाबी भी वे जो अधिकांशतः क़ुर्आन के हाफ़िज़ों में से थे, स्वयं आँहज़रत ﷺ के लिए तो यह ख़बर मानो 80 बेटों के निधन की सूचना के

समान थी परन्तु इस्लाम में हर एक अवस्था में धैर्य का आदेश है। आप स. ने ख़बर सुनकर इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ा तथा फिर ये वाक्य कहते हुए चुप हो गए कि अबू बरा के काम हैं, अन्यथा मैं तो इन लोगों के भिजवाने को पसन्द नहीं करता था।

रजीअ तथा बेयरे मौऊना की घटना के बाद आप स. एक महीने तक हर दिन सुबह की नमाज़ के क़याम में अत्यंत दुःख के साथ रअल, बनू लहयान तथा ज़कवान नामक क़बीलों के नाम लेकर ख़ुदा तआला के समक्ष यह दुआ करते रहे कि ऐ मेरे आक़ा, तू हमारी हालत पर दया कर तथा इस्लाम के दुशमनों को रोक जो तेरे दीन को मिटाने के लिए इस निर्दयता एवं कठोरता के साथ निर्दोष मुसलमानों का ख़ून बहा रहे हैं।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- जैसा कि मैं सदैव तहरीक करता हूँ फ़लिस्तीन के पीड़ितों के लिए दुआएँ जारी रखें। अल्लाह तआला अत्याचारियों की पकड़ के जल्दी सामान फ़रमाए। निर्दोष लोगों को भी उसी तरह मारा जा रहा है जिस तरह उन सहाबियों की हत्या की गई, तथा धोखे से कभी एक जगह भेजा जाता है, कभी दूसरी जगह, फिर वहाँ बम्बारी की जाती है, अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

दुनिया के सामान्य हालात के लिए भी दुआ करें। दुनिया बड़ी तेज़ी से तबाही की ओर जा रही है तथा युद्ध के संकेत बढ़ते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला अहमदियों को युद्ध के बुरे प्रभाव से तथा उसके उपद्रव से सुरक्षित रखे। पाकिस्तानी अहमदियों के लिए भी विशेष रूप से दुआ करें, आजकल फिर उनके लिए कठिनाईयाँ बढ़ रही हैं। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए तथा दुष्टों से उनको भी मुक्ति दिलाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131